NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

पशुओ में लम्पी त्वचा रोग: भारत और उपमहाद्वीप में फैलती हुई बीमारी

ब्रह्मानंद बैरवा

परिचय:

लम्पी त्वचा रोग (एलएसडी) की पहली बार 1929 में जाम्बिया में पहचान की गई थी जिसके बाद यह कई अफ्रीकी देशों में स्थानिक हो गया। वर्तमान समय में भारत में भी यह बीमारी फेल रही हें जिसकी पुष्टि की जा चुकी है। लंपी स्किन डिसीज होने पर पशुओं के शरीर पर गांठें बनने लगती हैं।। पशुओं को तेज बुखार होता है और दुधारु पशु दूध देना कम कर देते हैं। इस विशेष बीमारी का कोई इलाज या टीका नहीं है और लक्षणों के अनुसार उपचार दिया जाता है। देश में एक बड़ी आबादी पशुपालन से जुड़ी हुई है, ऐसे में एक नई बीमारी लम्पी स्किन डिजीज ने पशुपालकों को परेशानी में ढाल दिया है, इस बीमारी को लेकर लोगों के मन में कई तरह के सवाल है जैसे- रोग का कारण, बचाव के उपाय, रोग का उपचार, पशुशाला की सफाई, मृत पशु का प्रबंध आदि इन सभी के बारे में यह लेख अवश्य पढ़ें-

लंपी स्किन डिजीज एक वायरल से होने वाली बीमारी है, जो विशेष रूप से गाय-भैंसों में व अन्य पशुओं में भी होती है। वर्तमान में यह रोग गायो को प्रभावित कर रहा है। और इससे देश की पशु संपदा की बहुत हानी हो रही है, साथ ही अगर इस रोग से पशुओ को नही बचाया गया तो हमे अधिक नुकसान भी भुगतना पड़ सकता है, जो कि भविष्य में मनुष्य के लिए एक बड़ी चुनोती भी हो सकती है क्योंकि की पशुओ से हमारे उपयोग के बहुत सारे उत्पाद प्राप्त होते है जो खेती में उपयोग किये जाते है साथ ही मनुष्य के उपयोग के उत्पाद भी प्राप्त होते जिनको हम दैनिक आहार में शामिल करते है।

मवेशियों में लम्पी त्वचा रोग के कारण

यह रोग एक वायरल के कारण होता है जिसे आमतौर पर लम्पी स्किन डिजीज वायरस (एलएसडीवी) कहा जाता है। यह पॉक्सवायरस परिवार से संबंधित है जो भेड़ और बकरी के चेचक के समान है। यह वायरस तापमान में भी जीवित रह सकता है परन्तु 55 डिग्री सेल्सियस से ऊपर निष्क्रिय होता है। इसे 10 साल तक -80 डिग्री सेल्सियस पर रखे त्वचा के नोड्यूल्स और 6 महीने के लिए 4 डिग्री सेल्सियस पर संग्रहीत संक्रमित टिशू कल्चर तरल पदार्थ से पुन: प्राप्त किया जा सकता है

ब्रह्मानंद बैरवा (असिस्टेंट प्रोफेसर) करियर पॉइंट विश्वविद्यालय, कोटा (राजस्थान)

यह पीएच रेंज 6.6-8 पर भी सक्रीय रहता है। यह ईथर (20%), क्लोरोफॉर्म, फॉर्मेलिन (1%) के लिए अतिसंवेदनशील है। यह फिनोल (2%), सोडियम हाइपोक्लोराइट (2-3%) के लिए भी अतिसंवेदनशील है।

बन सकता है। हालाँकि, रुग्णता और मृत्यु दर, देशी मवेशियों की तुलना में क्रॉसब्रेड में अधिक है। वन्यजीवों से वायरस की सूचना नहीं मिली है। यह वायरस मनुष्यों में संचरित होने के लिए ज्ञात नहीं है।

वायरस लंबे समय तक सूखे घावों में बना रहता हैं और एक महीने से अधिक नेक्रोटिक त्वचा नोड्यूल में जीवित रह सकता है। वायरस सूरज की रोशनी में निष्क्रिय होता है लेकिन कई हफ्तों तक जीवित रह सकता है। इसलिए एक बार प्रकोप होने पर वायरस से छुटकारा पाना मुश्किल होता है। अस्वस्थता दर 10 से 50% के बीच भिन्न होती है, जबकि मृत्यु दर 5% से कम होती है। हालांकि यह वायरस भेड़/बकरी चेचक परिवार से संबंधित है, यह वायरस बहुत ही मेजबान-विशिष्ट है, केवल मवेशियों और जल भैंसों में बीमारी का कारण

लंपी स्कीन रोग के लक्षण

- संक्रमित पशु को बुखार आना शरीर का तापमान सामान्य से अधिक हो जाना।
- पशुओं के वजन में कमी
- नाक,आंखों से पानी टपकना
- मुह से लार बहना
- शरीर पर दाने निकलना
- दूध कम देना
- भूख न लगाना आदि इस रोग के प्रमुख लक्षण

गायों के लंपी वायरस से संक्रमित होने पर क्या करें:

- पशु में रोग के लक्षण दिखाई देने पर तुरंत उसे अन्य पशुओं से अलग करें।
- रोगी पशु के लिए चारा-पानी की व्यवस्था अलग बर्तन में करें।
- रोग ग्रस्त क्षेत्र में स्वस्थ पशुओं की आवाजाही को रोक दें।
- पशुओं के आवास के आस-पास नीम की पत्तियों को जलाकर धुंआ करें।
- पशुओं के आवास की दीवारों में यदि दरारें हो तो उसे भर दे अथवा कपूर की गाोलियां रखें
- पशुओं के आवास के आस-पास सोडियम हाईपोक्लोराईट के 2 से 3 प्रतिशत का छिड़काव
- मृत्यु हो जाए तो उसके सम्पर्क में आई वस्तुओं को फिनाइल या लाल दवा से धोना चाहिए।
- मृत पशु को गांव के बाहर जमीन में चूना व नमक डालक गाडऩा चाहिए। संदिग्ध मानकर कर रहे उपचार

संचरण की विधा:

संचरण का मुख्यत: मच्छर, काटने वाली मक्खियाँ और नर टिक हैं। आहार, पानी और संक्रमित त्वचा के सीधे संपर्क के माध्यम से संचरण का एक महत्वपूर्ण मार्ग नहीं माना जाता है। संचरण होने के लिए वायरस को त्वचा में इंजेक्ट किया जाना चाहिए। संक्रमित से स्वच्छ पशु में सुई के संचरण की संभावना रहती है। त्वचा के घावों, रक्त, लार, ओकुलर डिस्चार्ज में 35 दिनों से अधिक समय तक वायरस बहुतायत में मौजूद रहता है। संक्रमित सांड के वीर्य में भी वायरस उत्सर्जित होता है, लेकिन रोग के संचरण में वीर्य की भूमिका जानकारी में नहीं है।

निदान एक बड़ी चुनौती नहीं है क्योंकि लक्षण बहुत विशिष्ट हैं। प्रारंभ में, तेज बुखार होता है जो 41 डिग्री सेल्सियस से अधिक हो सकता है और स्तनपान कराने वाले जानवरों के मामले में दूध में कमी होती है। जानवर गंभीर रूप से उदास, भूख न लगना और तेजी से वजन कम होने लगता है। घाव 2-5 सेमी व्यास के त्वचीय गांठे बन जाती हैं, विशेष रूप से सिर, गर्दन, अंगों, थन, जननांग और पेरिनेम पर ज्वर की प्रतिक्रिया की शुरुआत के 48 घंटों के अन्दर दिखाई देने लगती हे। ये गांठे स्पर्श करने पर कठोर महसूस होती हैं।, और त्वचा, चमड़े के नीचे के ऊतकों में गहराई तक उठे होते हैं। नोड्यूल परिगलित हो जाते हैं और कई महीनों तक देखे जा सकते हैं। चेचक के घावों की तरह, निशान लंबे समय तक रह सकते हैं, खासकर अगर घाव गहरे हो जाते हैं तो ।

कुछ मामलों में, अंग और शरीर के अन्य उदर भाग, जैसे कि छाती, अंडकोश और

योनी, सूजन पर हो सकती है, जिससे चलने में कठिनाई हो सकती है। यदि सांड संक्रमित हो जाते हैं तो ये स्थायी रूप से या अस्थायी रूप से बांझ हो सकते हैं। गर्भवती पशुओं के मामले में गर्भपात और अस्थायी बांझपन भी पाया जा सकता है। जब घाव गंभीर होते हैं तो क्षीणता, और मास्टिटिस, निमोनिया, और नेक्रोटिक त्वचा प्लेग जैसी माध्यमिक जटिलताओं के कारण ठीक होने में लंबा समय लग सकता है। प्रयोगशाला निदान: निदान की पुष्टि के लिए पीसीआर आदर्श है, जिसके लिए त्वचा की गांठें, पपड़ी, लार, नाक से स्राव और रक्त उपयुक्त नमूने हैं।

उपचार और नियंत्रण:

यह एक वायरल बीमारी है, इसलिए इसका कोई विशेष इलाज नहीं है। द्वितीयक संक्रमण और गंभीर समस्या होने पर देखभाल के लिए गैर-स्टेरायडल दवाएं दी जा सकती हैं। जल्दी पता लगाना और तेजी से टीकाकरण कवरेज प्रकोप की प्रभावी रोकथाम ही एक कुंजी है। चूंकि वायरस कीट के काटने से फैलता है, इसलिए वेक्टर नियंत्रण महत्वपूर्ण है। इसके बचाव के लिए निम्न वैक्सिन "होमोलॉगस" एलएसडीवी लिव एटेन्युएटेड वैक्सीन स्ट्रेन, उदाहरण के लिए, "नीथलिंग" एलएसडी स्ट्रेन, "हेटरोलोगस" शीप पॉक्स या बकरी पॉक्स वायरस लाइव एटेन्यूएटेड वैक्सीन स्ट्रेन।

[ऐसा माना जाता है कि अगर कोई जानवर किसी वायरस से संक्रमित है, तो उससे ये संक्रमण इंसानों में भी फैल सकता है।|| लेकिन लंपी वायरस के मामले में ऐसा नहीं है अब तक इंसानों के लम्पी वायरस से संक्रमित होने के सबूत नहीं मिले हैं| अगर संक्रमित मवेशियों के आसपास भी इंसान रहते हैं, तो भी उनके संक्रमित होने का खतर कम है|]